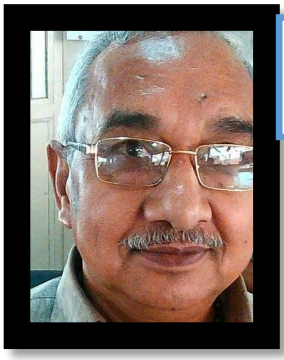

वीरेंद्र बहादुर सिंह

नोएडा
उत्तर प्रदेश

दोस्ती

तहसील की बाजार होने की वजह से बाजार बहुत बड़ी नहीं थी। इसी बाजार में दिलीप सोनी की गहनों की दुकान थी तो उसी के ठीक सामने नरेश की स्टेशनरी की दुकान थी। दोनों में बचपन से ही पक्की दोस्ती थी। पर सोमनाथ की यात्रा में जो हुआ, उसके बाद नरेश ने दिलीप से संबंध लगभग तोड़ लिया था।

सत्तर साल के रतिलाल का बाजार में अनाज का बहुत बड़ा कारोबार था। अपनी दुकान पर जाने से पहले वह दिलीप की दुकान पर रुक कर उसका हालचाल जरूर पूछते और जरूरी होता तो सलाह भी देते। बुजुर्ग होने की वजह से बाजार में सभी उनकी इज्जत करते थे।

उस दिन भी वह अपनी दुकान पर जाते समय दिलीप की दुकान के सामने रुक कर हालचाल पूछने के बाद बोले, "दिलीप, तुम और नरेश यानी कृष्ण-सुदामा की जोड़ी। पर इधर सुदामा के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं। इधर देख रहा हूं वह तुम्हारी दुकान पर नहीं आता?"

"काका, कुछ भी कहने जैसा नहीं है। उस मूर्ख को दोस्ती कद्र करना ही नहीं आता। हमारा एक थाली में खाने का संबंध था। रोजाना उसे चाय पीने के लिए बुलाता था। पूरे गांव को हमारी दोस्ती के बारे में पता था। सभी कहते थे कि दिलीप और नरेश यानी कृष्ण-सुदामा की जोड़ी। अब उस दोस्ती में दरार पड़ गई है। अगर मेरी कोई गलती है तो उसे सामने आ कर कहना चाहिए। उसने आ कर सिर्फ यही कहा कि 'अब सब खत्म हो गया है। बात कर के अंर कड़वाहट नहीं पैदा करना है। तुम अपने परिवार के साथ मजे करो और मैं अपने घरपरिवार में सुख से रहूंगा।' बस, इतना कह कर वह मेरी दुकान से चला गया।

" दिलीप ने उदास हो कर कहा, "इस बात को आज एक सप्ताह हो गया है। नरेश अपनी दुकान पर जाने के लिए यहीं से निकलता है। पर मेरी दुकान के सामने आता है तो गर्दन घुमा कर तेजी से निकल जाता है। भूल से भी मेरी और उसकी नजर न मिल जाए, इसलिए इधर देखता भी नहीं है।"

एक लंबी सांस ले कर दिवीप ने आगे कहा, "मेरी मिसिस का मायका अहमदाबाद में है। उसके दो सगे भाई हैं, पर दोनों भाई दुबई में रहते हैं। इसलिए वह बेचारी तो सालों से नरेश को भाई मान कर उसे राखी बांधती आई है। खाने के समय कभी नरेश घर आ जाता था तो कपिला उसे प्यार से खाने के लिए बैठा देती थी। सगे भाई जैसा हेत रखती थी, फिर भी उस बांगड़ू ने एक झटके में संबंध तोड़ दिए। वह बेचारी भी बहुत दुखी है। पर लाचार हूं काका। नरेश ने तैश में आ कर संबंध तो तोड़ लिया है तो अब मैं उसके पैर पकड़ने नहीं जाऊंगा।"

"तुम्हारा वह सुदामा इस समय संकट में है। तुम ने तो अपने बाप की सोने-चांदी की दुकान संभाल कर धंधे को आगे बढ़ाया। नरेश को भी वारिस में स्टेशनरी की दुकान मिली, पर धंधे की जानकारी न होने से दुकान नुकसान में चली गई। तुम्हें पता है? फोटोस्टेट की मशीन तो ली, पर गले में फंदा पड़ गया हो, इस तरह परेशान है। जब देखो, तब वह खराब ही रहती है। पूरे महीने फोटोस्टेट कर के जो कमाता है, उसे मैकेनिक एक झटके में ले कर चला जाता है।" इसके बाद रतिकाका ने धीमे से आगे जोड़ा, "सुना है उसकी पत्नी का हार्ट का ऑपरेशन कराना है। फोटोस्टेट मशीन की तरह पत्नी का हार्ट भी दुखी करने वाला निकला। डाक्टर ने समय दिया है कि उसी समय के अंदर अहमदाबाद जा कर औपरेशन नहीं कराया तो अधिक से अधिक वह छह महीने जिऐगी। न जाने कब गुब्बारा फूट जाएगा। दोनों बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। उस बेवकूफ को दुकान चलाना ही नहीं आता तो वह घर और दुकान दोनों साथ-साथ कैसे संभाल सकेगा? मुश्किल सवाल तो यह है कि पत्नी का ऑपरेशन कराने के लिए वह चार लाख रुपए कहां से लाएगा? सुना है देवनाथ गुप्ता के पास ब्याज पर रुपए लेने गया था?"

रतिलाल की आवाज में गंभीरता घुली थी, "मेरी बात सुनो। तुम कैसे भी हो, तुम्हारी हंसी-मजाक

नरेश सहन कर सकता है। उस गरीब को पैसे का लालच दे कर तुम उसकी वीडियो बनाते हो। तब भी मन बड़ा कर के वह हंसता रहता है। अगर किसी दूसरे से इस तरह का मजाक करते तो वह तुम्हारी पिटाई कर देता।" एक बुजुर्ग की तरह रतिलाल ने कारण ढूंढ़ निकाला, "बेटा, तुम बुरा मत मानना, पर गलती तुम्हारी है। गांव में दोस्तों के बीच तो तुम ने उसकी सैकड़ों बार फजीहत की होगी, पर सोमनाथ के मंदिर में तो तुम ने हद ही कर दी थी। अब तुम उसके साथ इस तरह करोगे तो वह संबंध कैसे रख पाएगा।"

वह पूरी घटना इस तरह घटी थी। इसी सावन के तीसरे सोमवार को गांव के करीब बीस दोस्त सोमनाथ के दर्शन करने गए थे। मंदिर के कंपाउंड में हजारों भक्तों की भीड़ के बीच दिलीप ने नरेश से कहा, "तुम दाहिना हाथ उठा कर एक बोलना, उसके बाद बायां हाथ उठा कर दो, फिर दाहिना हाथ उठा कर तीन, उसके बाद बायां हाथ उठा कर चार। अगर इस तरह एक हजार तक बोलने में तुम से कोई गलती नहीं हुई तो मैं तुम्हें एक हजार रुपए दूंगा। बोलो, लगानी है शर्त?" नरेश तैयार हो गया तो दिलीप ने दूसरी शर्त जोड़ दी। उसकी एकाग्रता बनी रहे, इसके लिए उसे आंखों पर पट्टी बांध कर जोरजोर से बोलना होगा। नरेश ने यह शर्त भी मान ली। इसके बाद दो दोस्तों की रूमाल ले कर नरेश की आंखों पर कस कर बांध दिया गया। तब दिलीप ने कहा, "रेडी।"

नरेश ने कहा, "हां।"हजार रुपए की लालच में नरेश दायां-बायां हाथ उठा कर जोरजोर से एक... दो... तीन... बोलने लगा तो बाकी दोस्तों को ले कर दिलीप वहां से दूर खिसक गया। मंदिर के कंपाउंड में भक्तों की जो भीड़ थी, उत्सुकतावश वह नरेश के अगल-बगल जमा हो गई। मंदिर की ओर मुंह कर के छत्तीस साल का यह हट्टाकट्टा युवक आंखों पर पट्टी बांधे हाथ ऊपर-नीचे कर के यह कैसी विचित्र हरकत कर रहा है? इस जिज्ञासा के साथ भीड़ बढ़ती ही गई। तमाम लोगों ने उसे पागल मान लिया।

नरेश पूरे उत्साह से अपने काम में लगा था। वहां इकट्ठा लोग उसे एकटक ताक रहे थे। "नौ सौ अट्ठान्नवे, नौ सौ निन्यान्नवे और यह एक हजार पूरा।" पसीने से लथपथ नरेश का गला सूख चुका

था। आंख से रुमाल हटाते हुए उसने कहा, "मैं जीत गया दिलीप ला हजार रुपए।" वहां देखने वालों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसे बधाई दी। दोस्त भाग गए थे और उसे पागल समझ कर अंजान लोग शोर मचा रहे थे। तेज गर्मी के बीच धूप में खड़े हो कर यह कसरत करने से नरेश का गला सूख रहा था। पर नरेश को अब उसकी परवाह नहीं थी। उसे कोई दुख भी नहीं था। इस वेदना की अपेक्षा दिलीप जैसे जिगरी दोस्त ने इस तरह का भयानक मजाक कर के लोगों के बीच पागलों में गिनती जो करा दी थी, उसकी असीम पीड़ा से वह व्याकुल हो रहा था। दिमाग की नसें फूल गई थीं। दिलीप या अन्य दोस्तों से बात किए बगैर क्रोध में तपता नरेश सीधे रोडवेज के बसस्टैंड पहुंच गया था।

इस घटना को याद कराते हुए रतिलाल ने दिलीप को समझाया, "दिलीप, तुम पैसे वाले हो और उस बेचारे का नसीब खराब है। फिर गरीब का भी तो स्वाभिमान होता है। वर्षों से तुम दोनों की दोस्ती देखी है, इसलिए दिल जलता है। इस समय वह परेशान और जरूरतमंद है। एक बुजुर्ग के रूप में तुम्हें समझाना मेरा फर्ज है। गलती तो तुम्हारी ही थी, इसलिए मन बड़ा कर के उसे माफ कर दो। उसके साथ खड़े हो कर दोस्ती निभाने का यही सही समय है।" "सही कहूं काका, यह जो हुआ है, उसे ले कर मेरा भी मन व्याकुल रहता है। वह बेवकूफ मिले तो उसे समझाना कि मेरे मन में जरा भी कड़वाहट नहीं है। गुस्सा थूक कर मेरे पास आए। मुझसे जो हो सकेगा, मैं मदद करने को तैयार हूं।"

दिलीप ने चाय मंगाई तो चाय पी कर रतिलाल ने विदा ली। शादी-ब्याह का मौसम चल रहा था, इसलिए पूरे महीने दिलीप धंधे मे व्यस्त रहा। पिछले पंद्रह दिनों से नरेश बाजार में दिखाई नहीं दे रहा था। एक दिन अपनी दुकान पर जाते हुए रतिलाल आए, "सुनो, उस गरीब के सिर से एक परेशानी तो कम हुई।" उन्होंने बताया, "नरेश एक महीने से अहमदाबाद में था। भगवान की कृपा से पत्नी का औपरेशन अच्छी तरह हो गया था। न जाने किस से ब्याज पर रुपए लिए हैं?" "जिसका कोई नहीं होता, उसका साथ कुदरत देती है। इस तरह के अभागों को कुदरत के अदृश्य हाथ का सहारा मिलता है।" संतोष की सांस ले कर दिलीप ने चाय मंगाई, "चलिए जो हुआ अच्छा ही हुआ। इस खुशी में चाय पीते हैं।"

दो दिन बाद नरेश आया। दिलीप के सामने खड़े हो कर उसने कांपती आवाज में कहा, "दिलीप एक व्यक्तिगत बात कहने आया हूं। मैंने बहुत बड़ा पाप किया है।" नरेश की आंखें नम थीं और आवाज में ऐसा अथाह संकोच था कि इतना कहने के बाद जैसे आगे कुछ कहने की हिम्मत ही न हो रही हो, इस तरह सिर नीचे किए चुपचाप खड़ा रहा। "तुम्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं है भाई, मैं सब जानंता हूं। अब माफी मांग कर तमाशा करने की जरूरत नहीं है। हजारों बार मजाक कर के तुम्हें न जाने कितना दुख पहुंचाया है तो क्या मैं ने कभी माफी मांगी है? दोस्त किसे कहते हैं? जो हो गया, सो हो गया। अब अगर उसके लिए माफी मांगनी पड़े तो इसे दोस्ती नहीं कहा जाएगा।" आंखों में आंसू भरे नरेश हैरान था।

"नरेश सुनो, पंद्रह साल का था, तब से दुकान संभाल रहा हूं। इतनी सी जगह में ढ़ाई करोड़ का माल रखने वाले की नजर भला कच्ची होगी? अंदर तिजोरी वाले कमरे में तुम्हारे अलावा किसी दूसरे को जाने नहीं देता। सोमनाथ मंदिर से आने के बाद तुम लड़ने आए तो उस समय मैं अंदर था। तुम्हारी आवाज सुन कर मैं तिजोरी बंद कर के बाहर आया, पर सौ-सौ ग्राम के तेलह बिस्कुट भगवान के फोटो के पास रखे थे। तू एकदम गुस्से में जो मन में आ रहा था, वह बके जा रहा था, इसलिए एक अपराधी की भांति मैं सिर नीचे कर के सुनने के अलावा कुछ कह या कर नहीं सकता था। पानी पीने तू अंदर गया तो सोने के बिस्कुट देख कर तुम्हारी आंखों में चमक आ गई। मेरे ऊपर खफा हो कर दुश्मनी निकालने के लिए तुम ने एक बिस्कुट उठा कर पैंट की जेब में डाल लिया। नरेश अंदर मैं ने इस तरह शीशा लगवा रखा है कि यहां बैठे-बैठे सब देख सकता हूं।" दिलीप के आगे दोनों हाथ जोड़ कर नरेश ने पूछा, "दिलीप उस समय तुम ने कुछ किया क्यों नहीं? उसी समय मुझे पकड़ कर दो तमाचा मार दिया होता तो मैं इस पाप से बच जाता।" नरेश की आवाज में अथाह पछतावा था, "दिलीप, तुम ने ऐसा क्यों नहीं किया? सच कहूं, रंगेहाथ पकड़ कर उस समय मारा होता तो इस समय से कम पीड़ा होती।" उसने दोनों हाथों से सिर पीटते हुए कहा, "पत्नी तो जितना नसीब में होता जी लेती, पर उसने मुझे मार डाला। दिलीप इस चोर को... दोस्त के साथ गद्दारी करने वाले इस... को उसी समय पीट देना चाहिए था। अपनी आंखों से देख कर भी तू ने कुछ क्यों नहीं कहा?"

हंसते हुए दिलीप ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, "नरेश मेरी बात सुन, रंडीबाजी या दारू के लिए चोरी की होती तो तुरंत तेरी पिटाई कर के पुलिस को सौंप देता। उस समय तू मुझसे नाराज था। पत्नी को बचाने के लिए पैसे की तंगी से परेशान था। इसलिए अपनी बुद्धि के हिसाब से तू ने दुश्मनी निकाली। सौ ग्राम सोने की अपेक्षा दोस्ती की कीमत बहुत ज्यादा होती है। नरेश मूर्ख, इतने सालों की दोस्ती में तू ने मुझे पहचाना नहीं? सोने के संताप में स्वजन का सत्यानाश करना मेरे स्वभाव में नहीं है।"

आभारभरी नजरों से ताक रहे नरेश की आंखों में आंखें डाल कर दिवीप ने आगे कहा, "गांव वाले हमें क्या कहते हैं, यह तो पता है न? कृष्ण हमेशा शान से लीला करते हैं, तो कभी-कभार सुदामा को भी तो मजाक करने का हक है।" दिलीप ने हंसते हुए नरेश की फीठ पर धौल जमाते हुए कहा, "धंधे वाला आदमी हूं, इसलिए पूरा पैसा लूंगा। मन में जरा भी टेंशन लिए बगैर अपनी सुविधा के अनुसार हजार, दो हजार जितना भी हो सके, समयसमय जमा कराते रहना।" दिलीप अपनी बात कह रहा था और आभारवश नजरों से नरेश उसे ताक रहा था। उस करुणमंगल के पलों में नरेश ने दिलीप को सीने से लगा लिया। उस समय दोनों दोस्तों की आंखें नम थीं।

ISSN:2583-8849